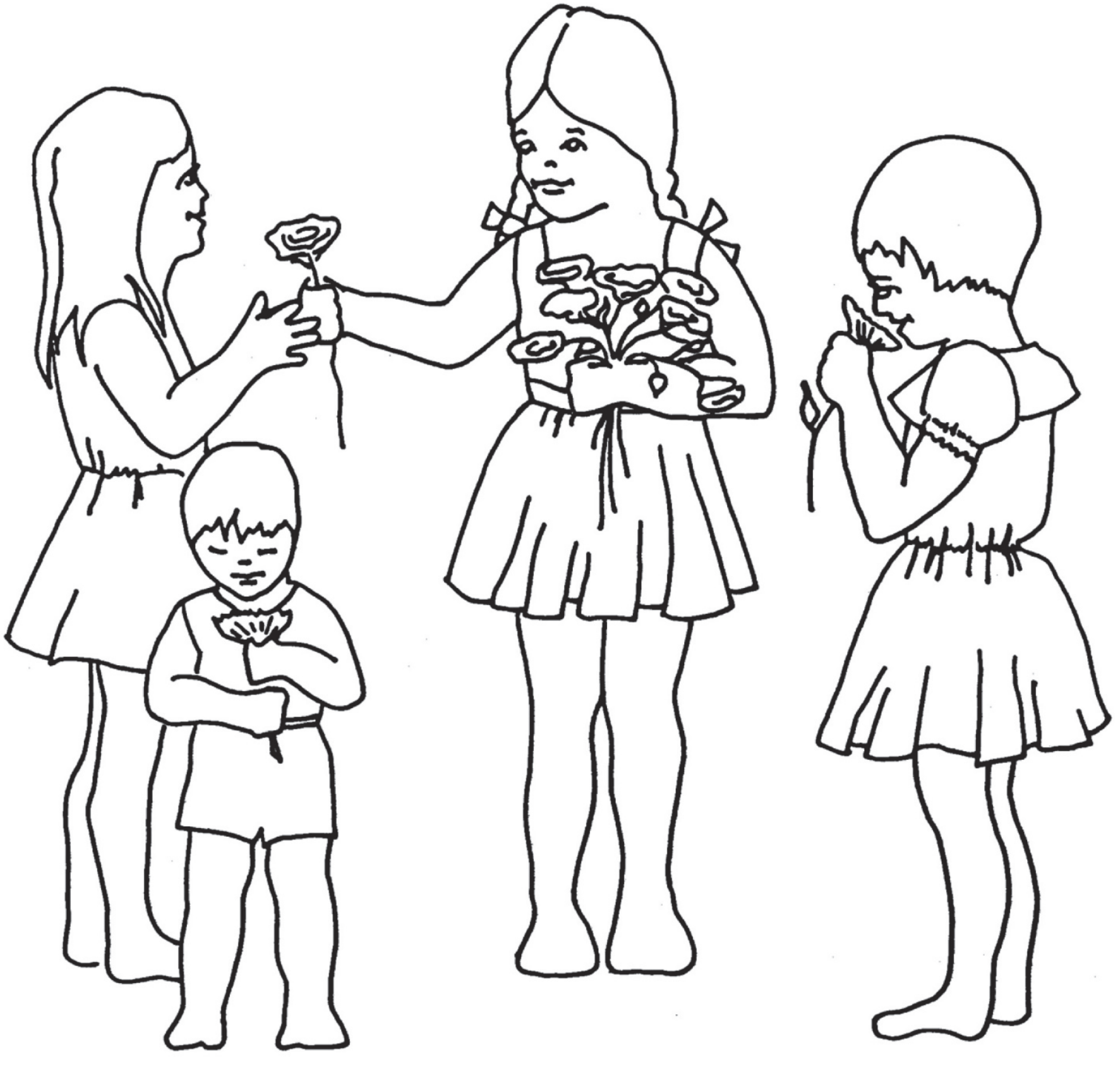

“हे चेतना के पुत्र ! मेरा प्रथम परामर्श यह है : एक शुद्ध, दयालु एवं प्रकाशमय हृदय धारण कर ...।”

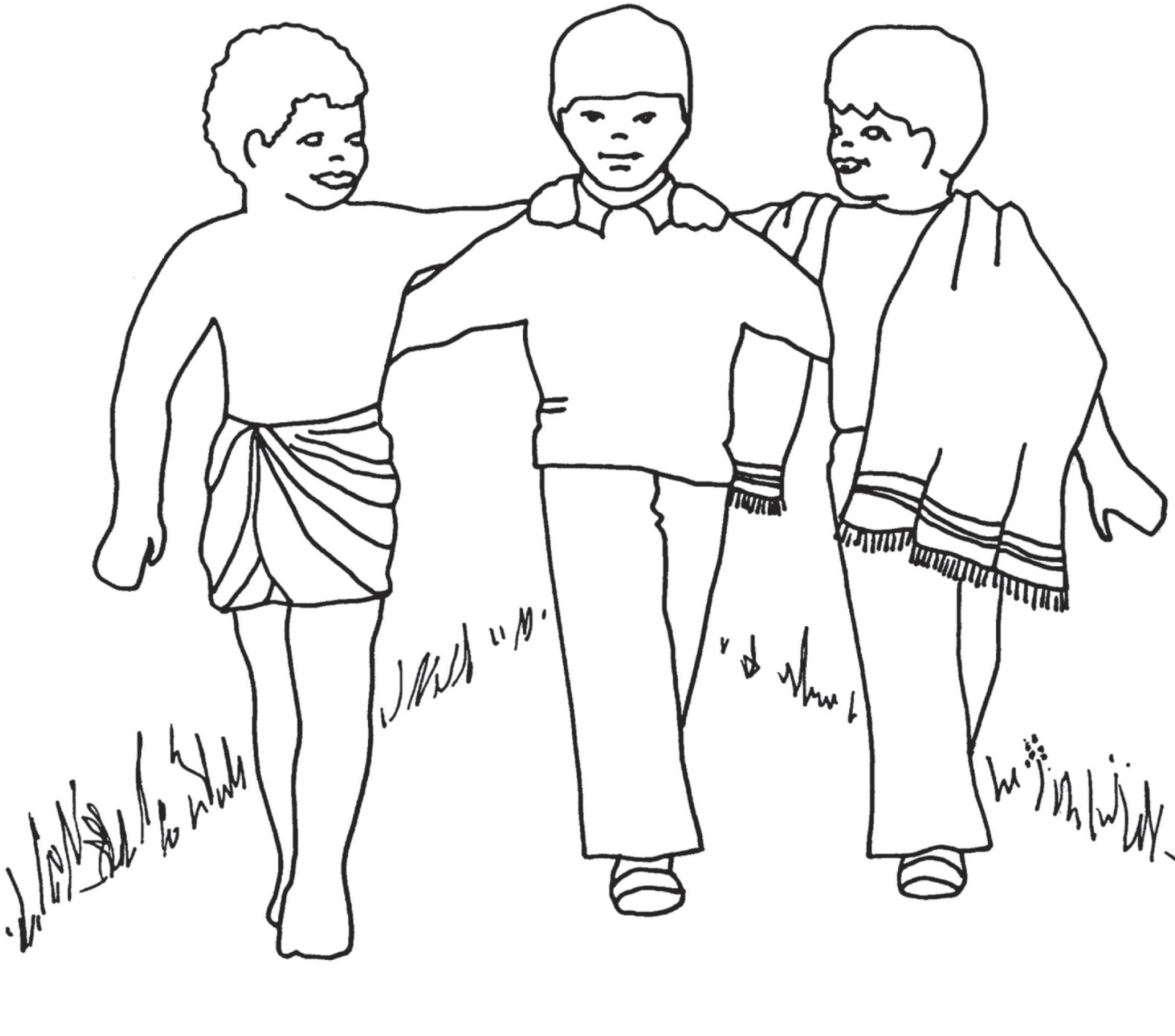

“न्यायपथ का अनुसरण करो, क्योंकि यही सीधा मार्ग है।”

“हे मित्र ! अपनी हृदय–वाटिका में प्रेम के गुलाब के अतिरिक्त कुछ भी न उपजा ...।”

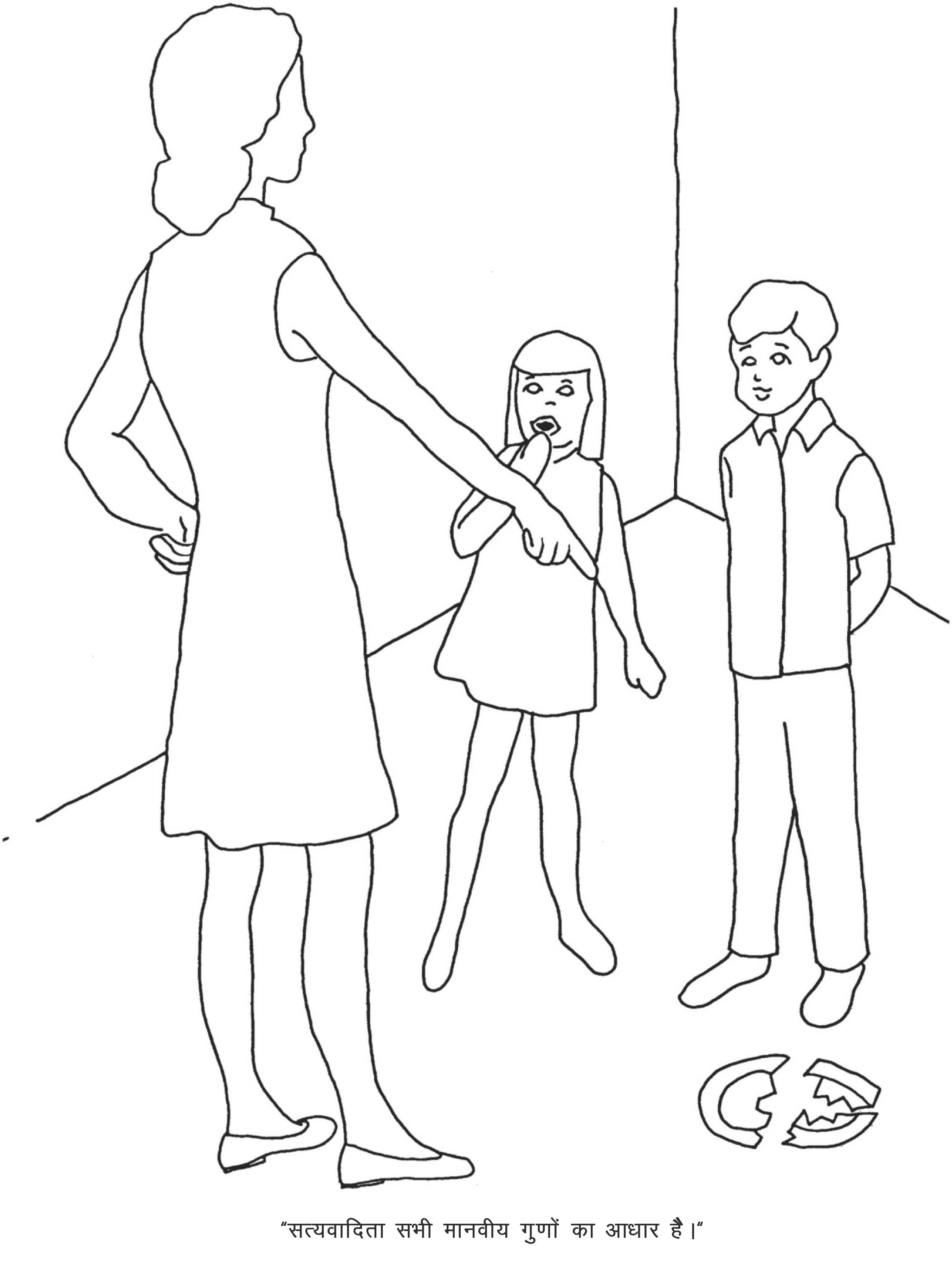

“सत्यवादिता सभी मानवीय गुणों का आधार है।”

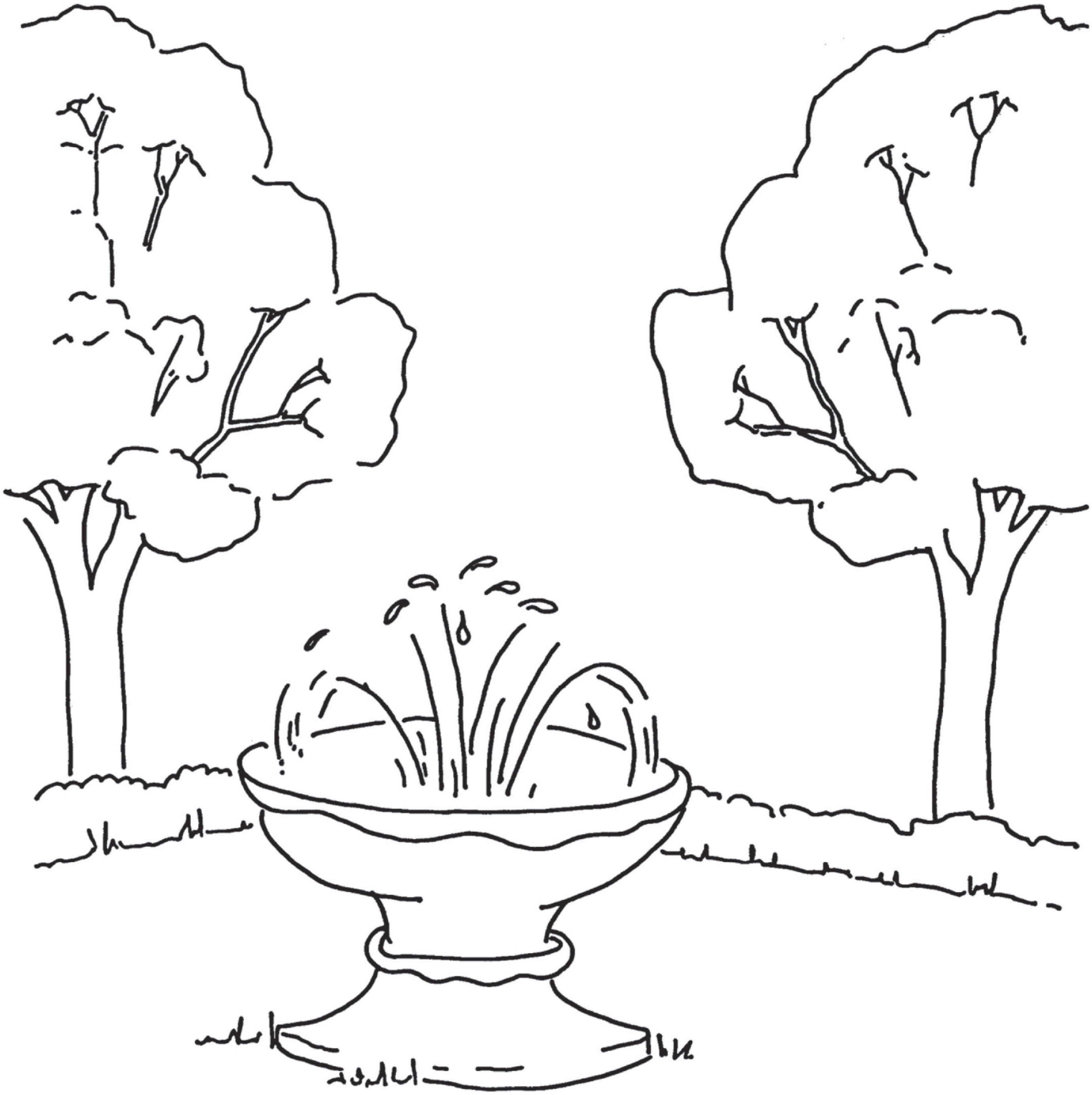

"दान देना तथा उदार रहना मेरे गुण है, कल्याण हो उसका जो स्वयं को मेरे गुणों से अलंकृत करता है।"

“धन्य है वह जो अपने भाई को अपने से अधिक महत्व देता है।”

"हे मनुष्य के पुत्र ! अपने हृदय के आनन्द में लीन रह ताकि तू मुझसे मिलन करने तथा मेरे सौंदर्य को प्रतिबिम्बित करने के योग्य बन सके।"

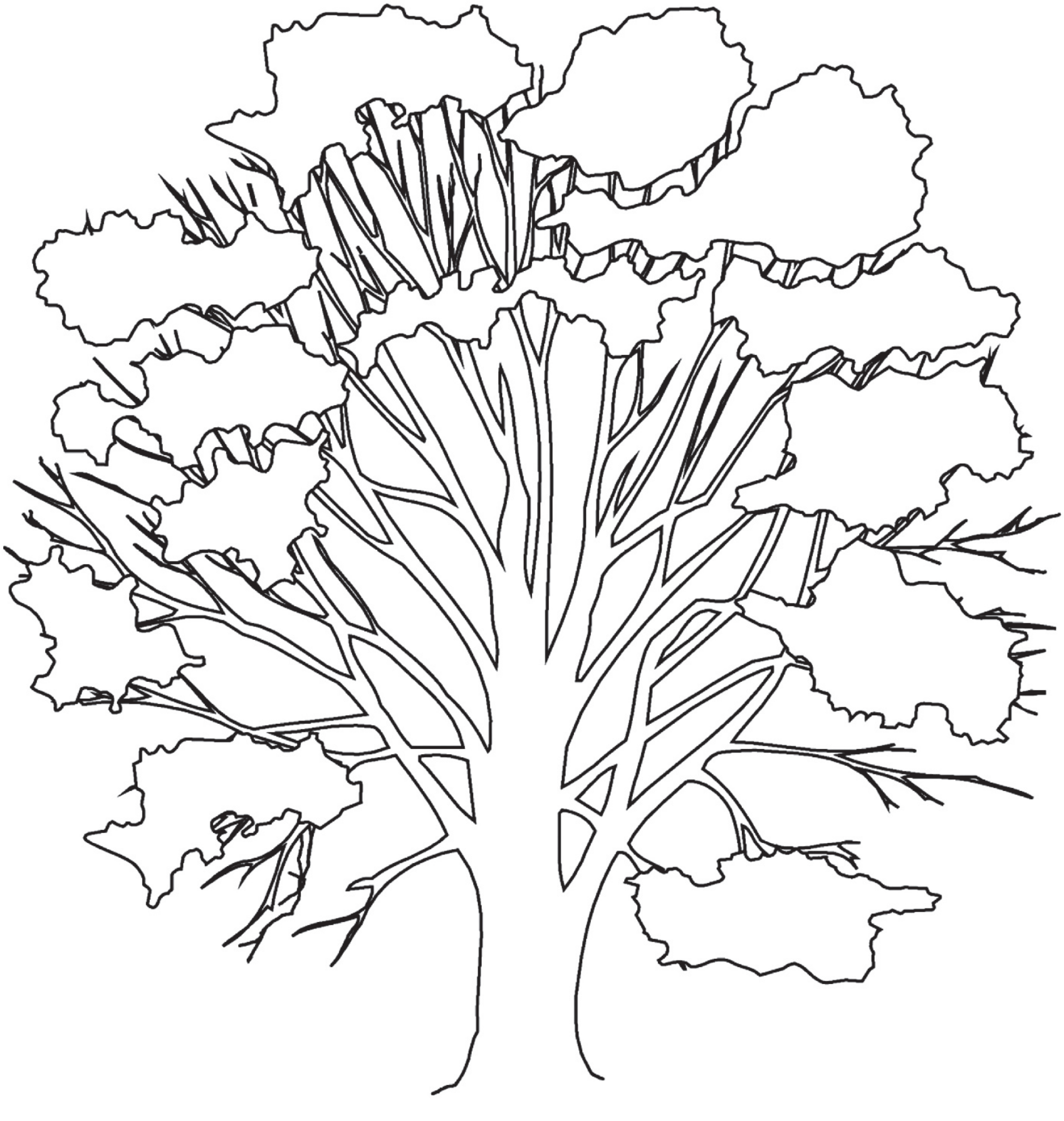

"हमें सभी समय अपनी सत्यवादिता और ईमानदारी प्रदर्शित करनी चाहिये ...।"

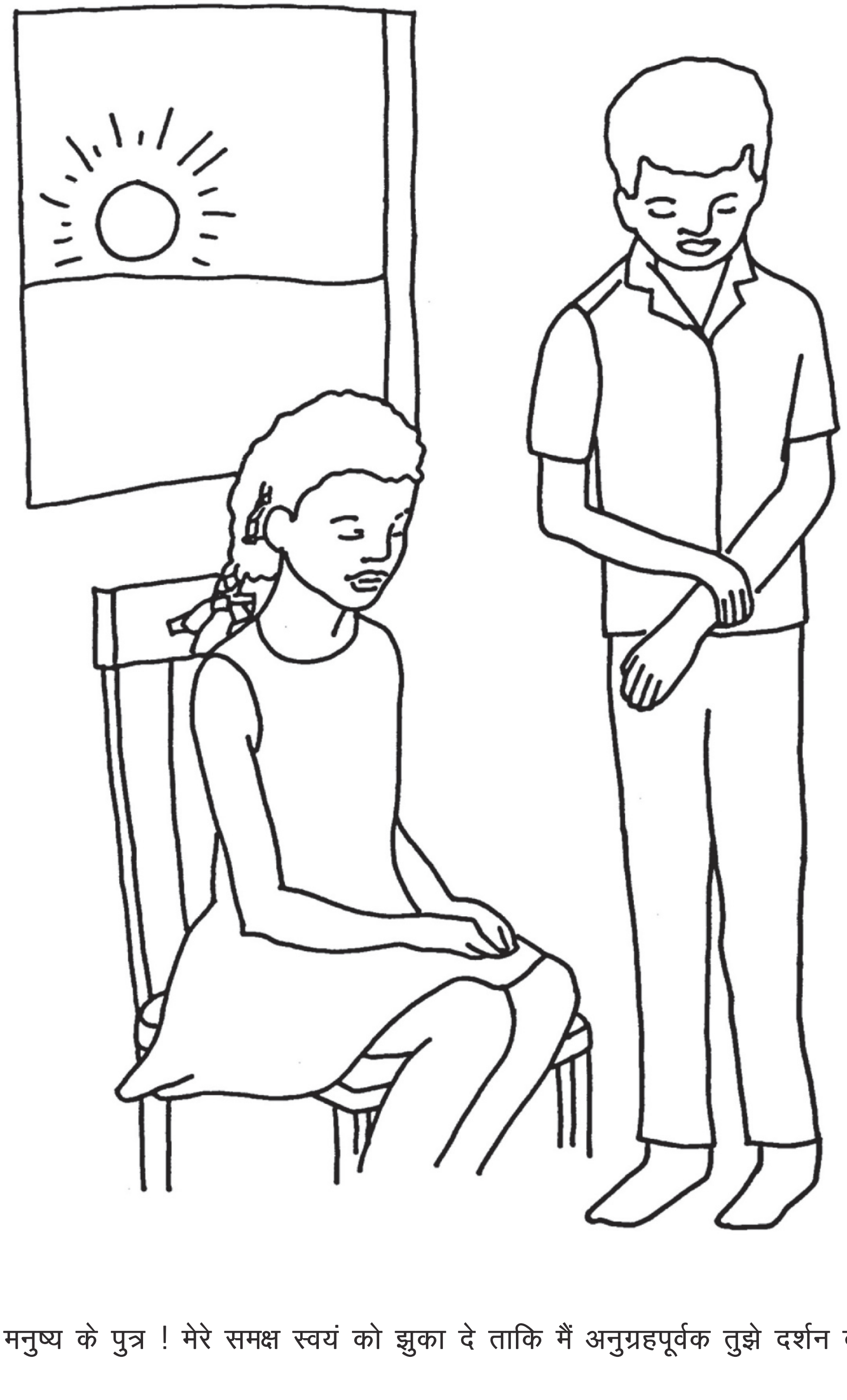

“हे मनुष्य के पुत्र ! मेरे समक्ष स्वयं को झुका दे ताकि मैं अनुग्रहपूर्वक तुझे दर्शन दे सकूँ।”

"तुम सदा आनन्दित और प्रसन्न रहो और ईश्वर को धन्यवाद देने के लिये उठ खड़े हो, ताकि यह कृतज्ञता अनुकम्पाओं को बढ़ाने में सहायक बन सके।"

"... क्षमा और दया तथा उसे अपना आभूषण बनने दो जो ईश्वर के प्रिय पात्रों के हृदयों को आनन्दित कर दे।"

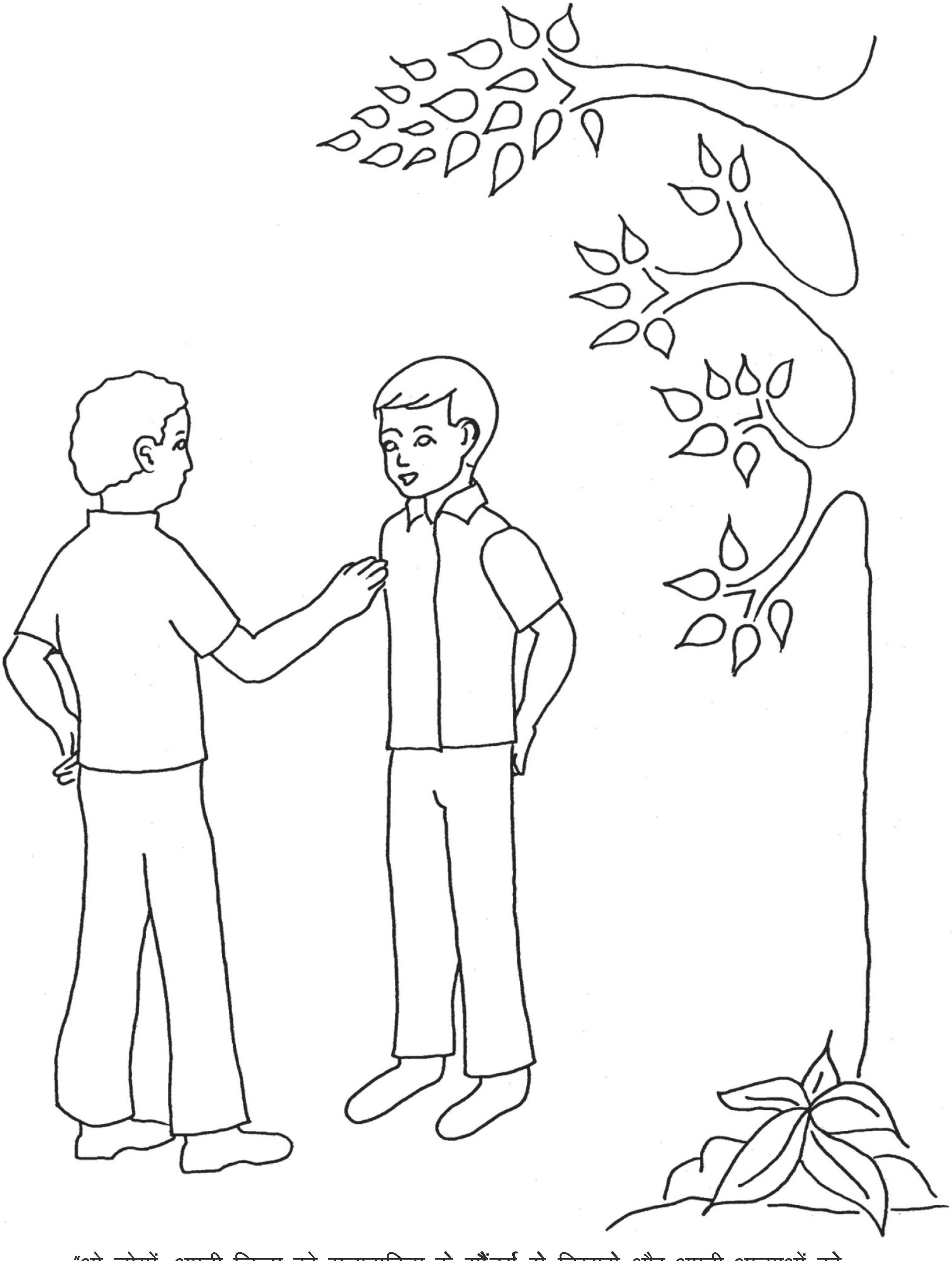

“ओ लोगों, अपनी जिव्हा को सत्यवादिता के सौंदर्य से निखारो और अपनी आत्माओं को ईमानदारी के आभूषण से विभूषित करो।”

“ईश्वर का साम्राज्य निष्पक्षता और न्याय के साथ–साथ, कृपा, करूणा, और प्रत्येक जीवित आत्मा के प्रति दया पर भी आधारित है।”

"यह जान लो कि तुम्हारा सच्चा अलंकरण ईश्वर से प्रेम करने में, और उसके अतिरिक्त अन्य सभी से अनासक्त रहने में है ...।"

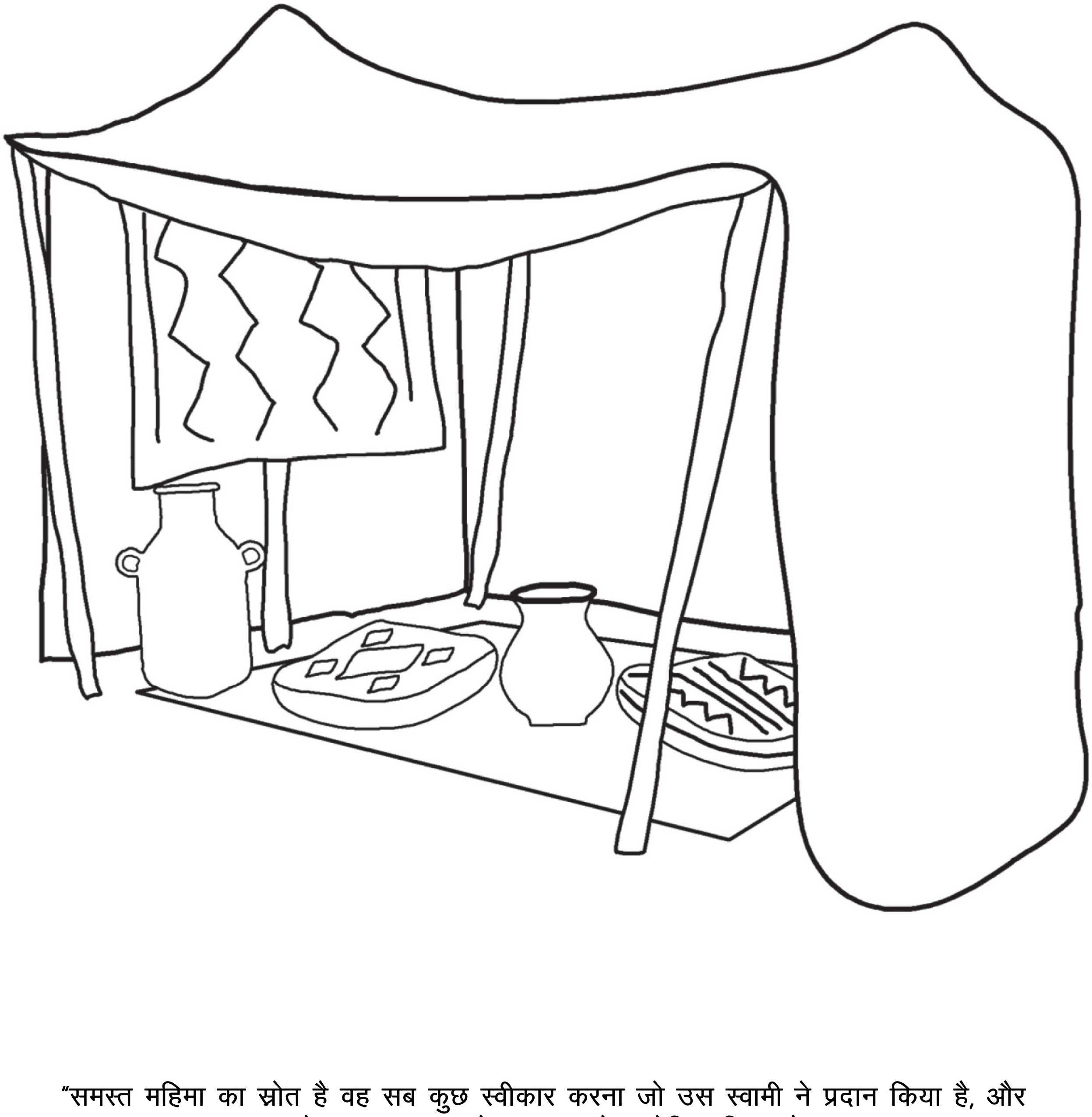

“समस्त महिमा का स्रोत है वह सब कुछ स्वीकार करना जो उस स्वामी ने प्रदान किया है, और उसमें संतुष्ट रहना जो उस प्रभु ने आदेशित किया है।”

“आशीर्वादित है वह जो सभी मनुष्यों से पूर्ण दया और प्रेम के भाव से मिलता है।”

"साहस और शक्ति का स्रोत है ईश्वर के शब्द का प्रचार, और उसके प्रेम में दृढ़ता।"

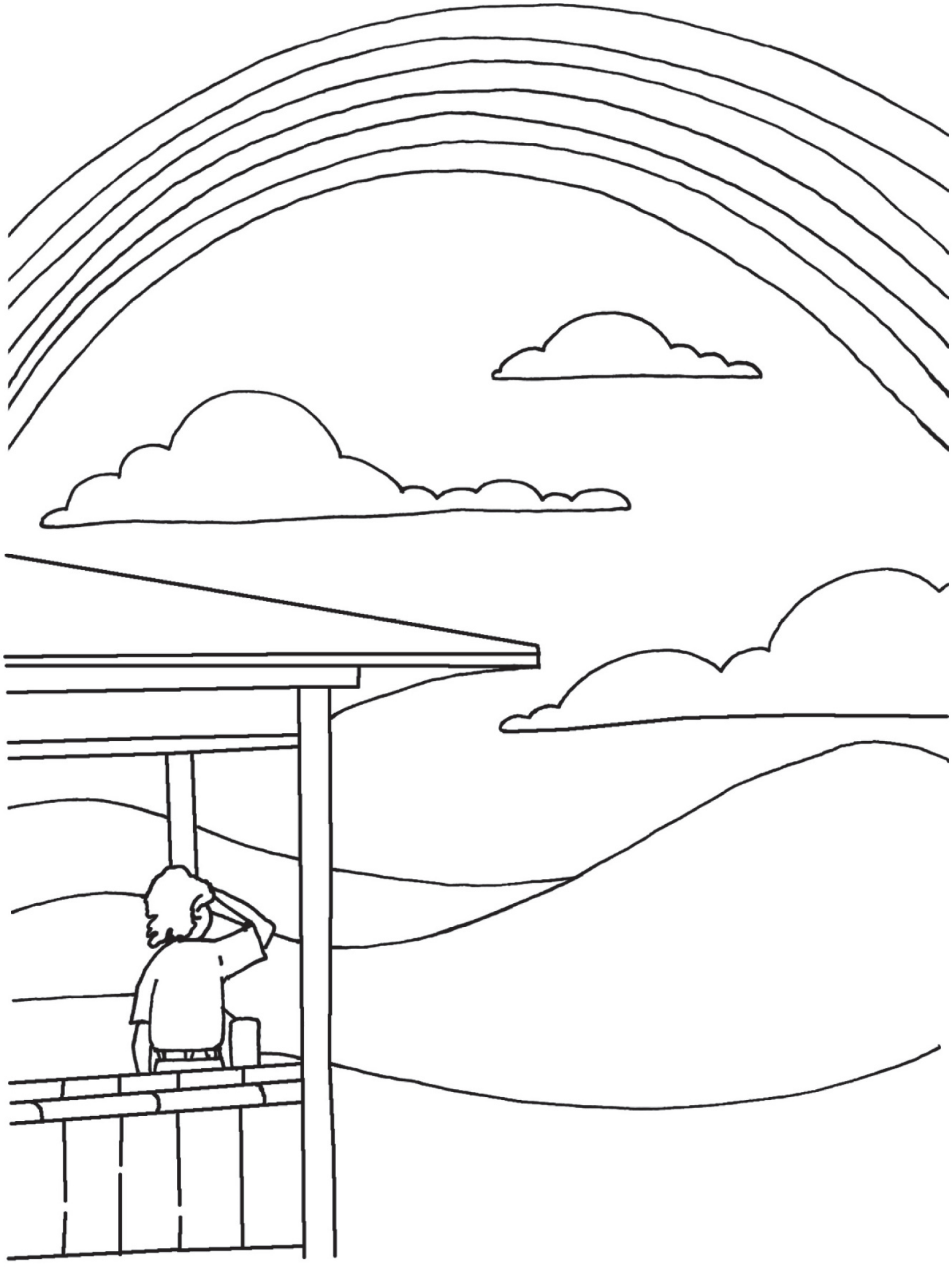

"सदा आशावान रहो, क्योंकि मनुष्य पर ईश्वर के उपहारों की वर्षा कभी नहीं थमती।"

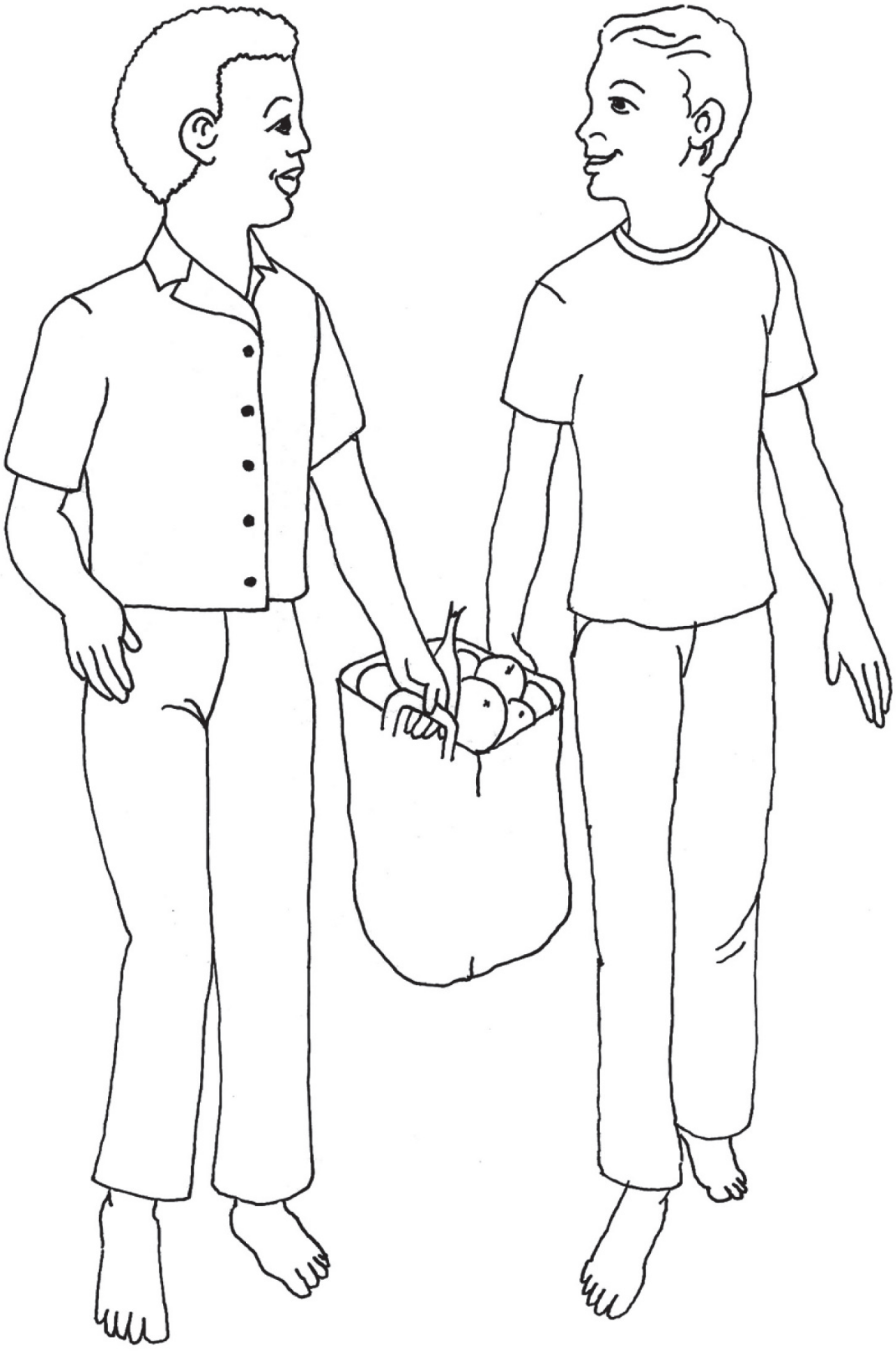

"विश्वासपात्रता लोगों को शांति और सुरक्षा की ओर ले जाने वाला महानतम द्वार है।"

"वस्तुतः मैं ईश्वर से याचना करता हूँ कि वह तुम्हारे हृदय में अपने प्रेम की अग्नि प्रज्जवलित करे ...।"

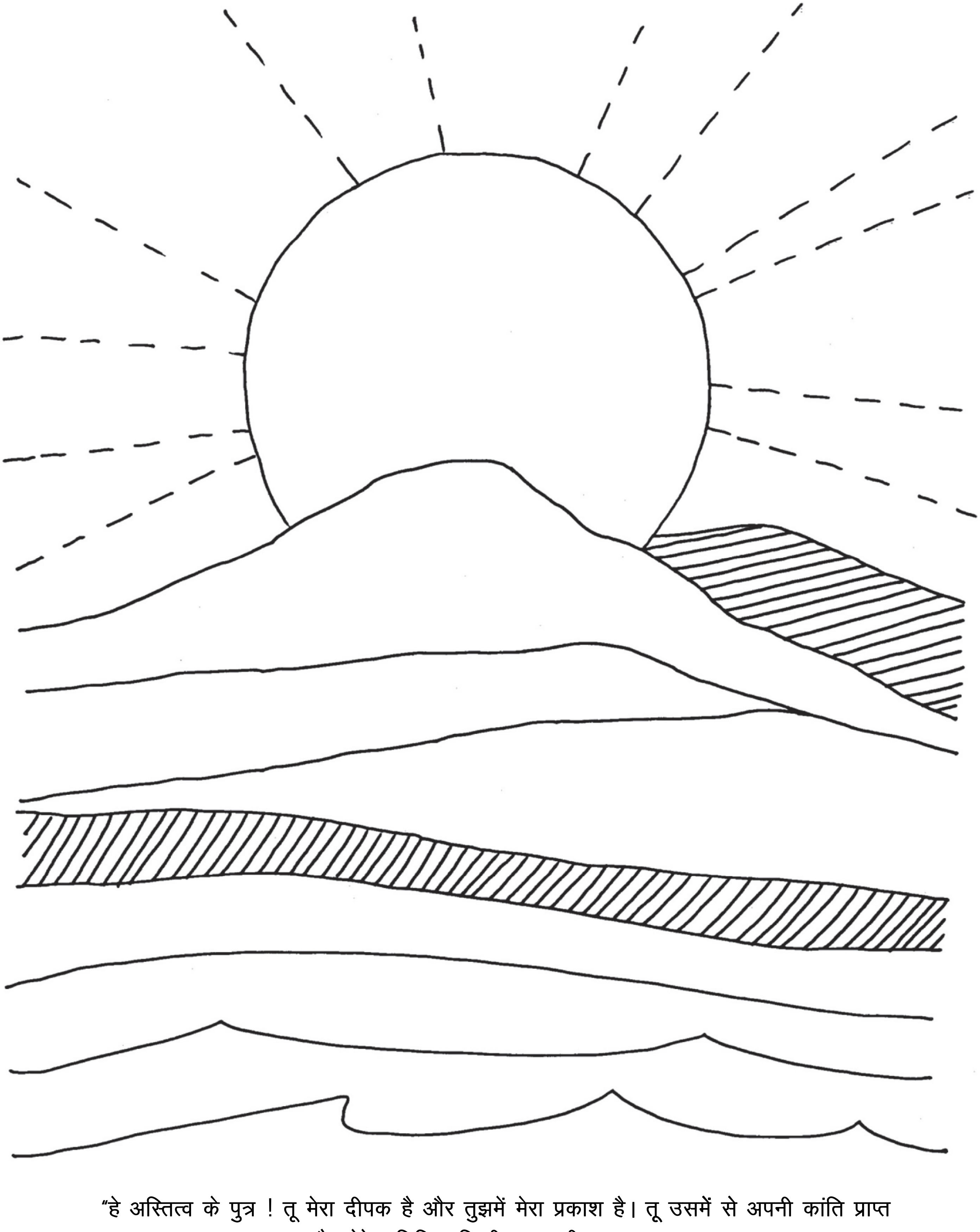

“हे अस्तित्व के पुत्र ! तू मेरा दीपक है और तुझमें मेरा प्रकाश है। तू उसमें से अपनी कांति प्राप्त कर और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य की कामना न कर।”

“आनन्दित है वह निष्ठावान जो उच्च प्रयासों के परिधान से शोभित है और इस धर्म की सेवा करने के लिये उठ खड़ा हुआ है।”

“सत्य ही, वह उनके पुरस्कारों को बढ़ा देता है जो धैर्य से सहते हैं।”

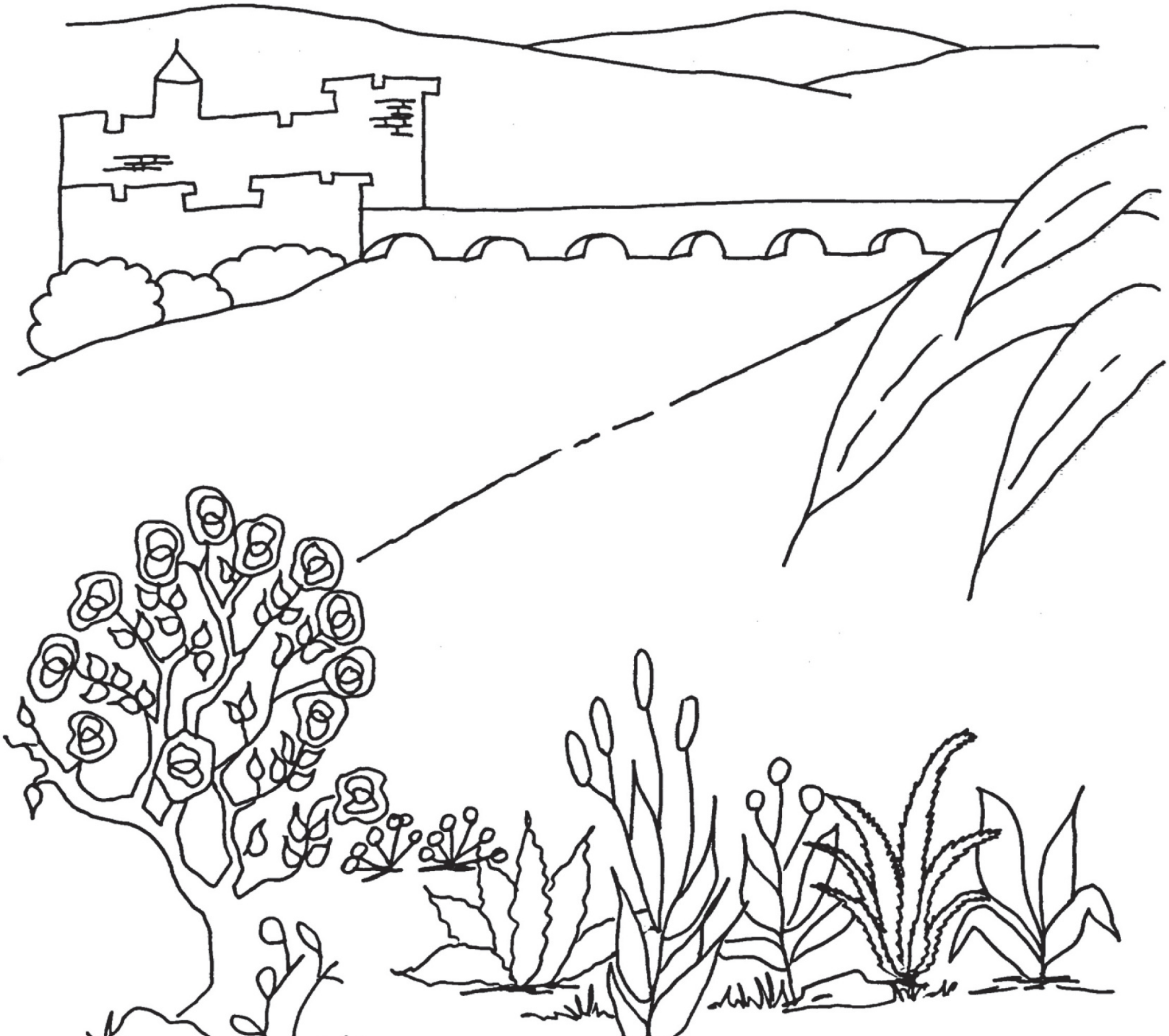

"तुम्हारा स्थान अत्यन्त ऊँचा होगा अगर तुम अपने स्वामी के धर्म में अडिग रहोगे।"